© MAY 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 11 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I11-1717347

शैलेश मटियानी की कहानी संग्रह "चील और अन्य कहानियाँ" की दलित चेतना का विश्लेषण कीजिए?

निशु कुमारी
चतुर्थ वर्ष छात्रा, हिन्दी विभाग, लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन (दिल्ली यूनिवर्सिटी), नई दिल्ली

सारांश - शैलेश मटियानी (1931-2001) जी स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी के सबसे बड़े जनकथाकार हैं। हिन्दी कथा साहित्य के प्रथम प्रकाश स्तम्भ प्रेमचन्द के बाद द्वितीय कथा महारथी मटियानी जी हैं। शैलेश मटियानी ने दलित साहित्य के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।दबे कुचले, भूखे, नंगे, दलित, उपेक्षितों के जितने व्यापक संसार को आत्मीयता से मटियानी जी ने अपनी कहानियों में यथार्थ चित्रण किया है। मटियानी जी के पात्र उनके जिये-भोगे हैं अर्थात शैलेश जी ने गरीबों का भयंकर जीवन जिया है। शैलेश जी का जीवन अधिक कष्टदायक तथा संघर्षमय रहा है, जिसका असर उनकी रचनाओं तथा उनके साहित्य में देखने को मिलता है। उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से दलित, असहाय,पीड़ित, समाज से वंचित लोगों तथा भीख मांगने वाले आदि का जीवन देखा है। शैलेश जी दलित वंचितों के प्रेमचन्द से भी बड़े हमदर्द व पैरोकार साबित होते हैं। शैलेश मटियानी हिंदी कथा-साहित्य में एक विलक्षण प्रतिभा रखने वाले रचनाकार हैं। उनकी "चील तथा अन्य कहानियाँ" कहानी संग्रह में शोध करना हिन्दी पाठकों के समक्ष नया दलित साहित्य प्रस्तुत करने के समान होगा क्योंकि हिंदी कथा साहित्य में उन्हें अभी तक उपेक्षित किया गया है । इन्हें वह स्थान प्राप्त नहीं है जो स्थान के हकदार है। 'चील तथा अन्य कहानियों' में उपस्थित दलित विमर्श के स्वरूप, सरोकार और संवेदनात्मक आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

बीजक शब्द - शैलेश मटियानी, हिंदी साहित्य, दलित चेतना, कहानी , चील

I. प्रस्तावना

रमेश चंद सिंह से शैलेश मटियानी तक की यात्रा एक ऐसे जीवटता अर्थात अदम्य जीवन शक्ति से पूरित व्यक्तित्व है। हिंदी कथा साहित्य में नई कहानी आंदोलन में मटियानी अपने विस्तृत तथा समृद्ध रचना संसार लेकर उपस्थित हुए । उन्होंने अपने 50 वर्ष के लंबे लेखन काल में तीस से अधिक कहानी संग्रह और 30 उपन्यासों का सृजन किया। इसके अतिरिक्त लोक कथा साहित्य, बाल कथा साहित्य, निबंध, संस्मरण और दो पत्रिकाओं का संपादन किया । इसलिए इनका रचना संसार प्रेमचंद जी के बाद इतने विपुल साहित्य का विषय वैविध्य के साथ सृजन करने वाले शैलेश जी अकेले व्यक्तित्व हैं। वे स्वयं प्रेमचंद जी के बाद द्वितीय श्रेष्ठ कथा महारथी हैं। मटियानी जी अपने जीवन में केवल संघर्ष, कष्ट तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को झेल कर अपने आप को निखारा है। यही कष्टमय परिस्थितियाँ उनके कहानियों में झलक देते हैं।

दलित विमर्श से तात्पर्य उस हिंदी साहित्य और वैचारिक आंदोलन से है, जो दलितों द्वारा स्वयं की पीड़ा, संघर्ष, सामाजिक-आर्थिक असमानता, और जाति-आधारित अत्याचारों को उजागर करता यह मुख्यधारा की साहित्य के विपरीत दलितों के 'भोगे हुए यथार्थ' को प्रस्तुत करता है। जिसका उद्देश्य समाज में समतामूलक तथा मानवीय गरिमा को बनाए रखें। यह विमर्श केवल जातिगत उत्पीड़न तक सीमित नहीं है, यह समूची सामाजिक संरचना पर आलोचना करती है जिसमें मनुष्य को अपमान के घेरे में बांध लिया । यह समाज के हाशिए वर्ग,
निचले तबके,उपेक्षित,पतित वर्ग तथा असहायों वर्गों की और इशारा करता है। दलित विमर्श में दलित साहित्यकार अपने जीवन के विपरीत परिस्थितियों तथा समाज में स्वर्ण के द्वारा किए गए जुल्मो तथा कटु व्यवहारों का उल्लेख किया जाता है। विख्यात दलित चिंतक कंवल भारती ने लिखा है- "दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है, जिनमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है, अपने जीवन-संघर्ष में जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उनका उसी की अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिए कला का नहीं, बल्कि जीवन का और जीवन की जिजीविषा का साहित्य है।"[1]

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देखने को मिलता है परंतु उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि पहले ही तैयार हो गई थी। हिंदी साहित्य में दलित साहित्य का एक विशाल तथा समृद्ध भंडार है। दलित जीवन की समस्याओं को साहित्य में आरंभ से उठाया जा रहा है।आजादी के पहले

© MAY 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 11 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I11-1717347

दलितों के हक में प्रेमचंद ,निराला ,यशपाल जैसे महान रचनाकारों ने अपनी कहानियों में समाज के पतित तथा हाशिए वर्ग के जीवन के कठिनाइयों को अपने साहित्य में प्रतिबिंबित किया है। आजादी के बाद ओमप्रकाश वाल्मीकि, नैमिशराय, शैलेश मटियानी, राजेंद्र यादव अमरकांत जैसे रचनाकारों ने अपने साहित्य में दलित विमर्श को स्थान दिया है। हिंदी समाज में दलितों पर विचार करना एक नए तथा कटु यथार्थ को समक्ष प्रस्तुत करना था ।

शैलेश मटियानी ने अपनी रचनाओं में दलित विमर्श को सहानुभूति ही नहीं बल्कि तथा विरोधात्मक शैली में लिखा है।दलित जीवन को अस्मिता से जोड़कर अपनी रचनाओं में व्यक्त करते हैं। वह उनका जीवन दया भाव से नहीं बल्कि मानवीय यथार्थ में रचना करते हैं। उनकी कहानियों में भोगे हुए यथार्थ के कड़वे अनुभव मिलते है। उनकी कहानियों में अपने परिवेश का प्यार झलकता है तो दूसरी ओर समाज द्वारा प्रताड़ित और शोषित ऐसे लोग मिलते है जो नरक के समान जीवन जीने के लिए विवश है। इन पात्रों में भिखमंगे, उठाईगीरी, चोर बदमाश, जेबकतरे आदि शामिल है।यही कारण है कि उनके साहित्य में दलित जाति के समस्त सरोकारों का रेखांकन मिलता है। दलित जीवन पर शोध करने के लिए शैलेश की कहानियाँ पूर्णतया सहयोगी है। इस विषय के बारे में क्रांतिकारी कथाकार शैलेश मटियानी ने अपनी कहानियों में खुले और सहज विचारों में अपनी बात पुरजोर तरीके से कही है। जो हमें कहीं न कहीं से झिझोड कर रख देती है। मटियानी जी ने तो जीवन के सबसे निम्न स्तर की समस्याओं को बड़े आत्मीयता के साथ अनुभव करते हुए अपने साहित्य में उसे उकेरा है। महानगरीय जीवन की विकलांगता के वे स्वयं साक्षी रहे हैं। नरक जैसा जीवन जीने के बाद, उनके मन में मानवता के प्रति जो आस्था तथा लगाव है यह उसे महान लेखकों की श्रेणी में खड़ा करता है। शैलेश जी की कहानियों में उनके पात्रों का एक विरोध आत्मक स्वर समाज के प्रति उभर कर उत्पन्न होता है।

शैलेश मटियानी जी की कहानियों में नारी जीवन का सहज व कर्मठ चित्रण देखने को मिलता है जिसमें उन्होंने नारी को समाज के विपत्तियों से जूझते हुए दिखाया है। ऐसे नारी पात्र में चील की सतनारायणी, दो दुखों का एक सुख कहानी की मिरदुला आदि की परिगणना कर सकते हैं। मटियानी जी की कथा साहित्य में व्याप्त सार्वदेशिकता उभर कर आती है। जैसे स्त्री विमर्श,सामाजिक यथार्थ और दलित चेतना।

*शैलेश मटियानी की कहानी संग्रह "चील तथा अन्य कहानियों" का प्रकाशन वर्ष 1976 मे हुआ था। जिसमें कुल 9 कहानियाँ शामिल है।

1 हत्यारे(1973)
2 इब्बू मलंग
3 दुर्घटना
4 भविष्य
5 सफ़र पर जाने से पहले (1969)
6 दो दुखों का एक सुख(1966)
7 शरण्य की ओर
8 हारा हुआ (1970)
9 चील (1976)

यह संग्रह उनकी दलित , सामाजिक चेतना और यथार्थवादी लेखन को प्रदर्शित करता है।उनकी इन कहानियों में जहां समाज की बुराइयों और अंधकार का वर्णन है, वही मानवीय मूल्यो की किरणे भी वही दिखती है। वे कहानियों में मुबंई जैसे, महानगर तथा पर्वतीय अंचल के यथार्थ, शोषित जीवन को तथा दलित जीवन को भी सजीवता से भी दर्शाता है !

चील कहानी में दलित यथार्थ का प्रतीकात्मक जीवन
चील कहानी का प्रकाशन सन् 1976 में हुआ था । "चील" एक भयंकर दरिद्रता और गरीबी की कहानी है। उसका परिवेश इलाहाबाद का है। कहानी रामखिलावन नामक एक बच्चा और उसकी माँ सतनारायणी को केन्द्र में रखकर चली है। राम खेलावन जब आठ-नौ साल का होगा उस समय उसका बाप मर गया था और चार-पांच साल का था तब उसकी दादी मर गयी थी। रामखेलावन की अच्छी स्मृतियों में मां-दादी की यादगार पल है । बाप तो शराबी कबाबी और जुआरी था और अक्सर उसकी माँ को बहुत बुरी तरह से मारता रहता था। पर एक बात रामखेलावन को याद है कि उसका बाप चाहे कैसा भी था, चाहे कितने भी नशे में होता था, उसके लिए कोई-न-कोई चीज जरूर ले आता था।

'चील' कहानी अपने शीर्षक से ही प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करती है। "खिलावन घर जा रहा था कि एक चील उस पर झपटती है और गोश्त की पुटली उससे छीनकर ले जाती है। कुछ बोटियां जमीन पर बिखर जाती हैं जिन पर एक कुत्ता झपटता है।"[2] 'चील' (एक पक्षी) कहानी में केवल प्रकृति का अंग नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना के उस क्रूर और अवसरवादी वर्ग का प्रतीक है जो मृतप्राय या निर्बल प्राणियों पर मंडराता रहता है। जिस प्रकार चील

रामखेलावन पर झपटता है और उसका गोश्त लेकर गायब हो जाता है, उसी प्रकार उच्च वर्ग दुर्बल तथा निम्न वर्ग को शोषित करते है।

दलित जीवन का सबसे बड़ा संकट भोजन है। 'चील' में भूख केवल शारीरिक आवश्यकता नहीं, बल्कि अस्तित्व का संकट है। पात्र अपने जीवन के अस्तित्व के लिए संकटग्रस्त स्थिति में भी अपनी जिजीविषा की प्रबल इच्छा उत्पन्न करता है। रामखिलावन को लग रहा है "कोई चील तेजी से झपट्टा मारती हुई आई हैं और उसकी मुट्ठी में बन्द गोश्त के टुकडों को अपने पंजों में दबोच ले गई है।"[3] आज उस चील ने उसकी माँ को उससे छीन लिया था। कहानी के इस वक्तव्य में इतनी अधिक मार्मिकता तथा संवेदनात्मक चेतना उभर कर समक्ष प्रस्तुत होती है और बालक के बचपन के विपरीत स्थितियों को उभार मिलता है। यह विपरीत स्थितियों बालक के चंचलता छीन लेती है तथा उसके मानसिक विकास पर आघात पहुंचता है। इसलिए वह अपने आप उपेक्षित ,असहाय तथा सामाजिक संरचना से अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है। वह समय से पहले अपने आप को परिपक्व कर लेता है।

इस कहानी में समाज की संरचना में कठोर यथार्थ का वर्णन किया गया है तथा दलित जीवन पर में असुरक्षित, भाई आंतरिक संघर्ष का पक्ष का वर्णन होता है।

हत्यारे कहानी में निहित दलित चेतना

"हत्यारे" कहानी का प्रकाशन सन् 1973 में हुआ था। यह कहानी एक राजनीतिक व्यंग्य की कहानी है । इस कहानी में उच्च जाति के संकटमोचन तथा हरफूल चंद जैसे नेता लोग छोटी जाति के लोगों का कैसा राजनीतिक उपयोग करते हैं और समय आने पर उनको मरवा भी डालते हैं, इस हकीकत का यथार्थ चित्रण किया है। रामचरण केवट ने नगर पालिका के अधिकार क्षेत्र की जमीन गैर-कानूनी तरीकों से बिल्डिंग बनाई थी । रामचरण उन दलितों में से है जो धन संपत्ति वाला है और इधर कुछ हैसियत रखने लगा है। उसके पास बंदूक भी है। एडवोकेट श्रीवास्तव भी रामचरण को समझाता है, पर स्वर्ण नेता लोग उसे दलित जाति के नाम पर आंदोलन चलाने की सलाह देते हैं। उधर निर्धारित समय नगरपालिका का अफसर बुलडोजर लेकर आ जाता है। रामचरण और शिवचरण (रामचरण का पुत्र) दोनों बिल्डिंग की छत पर चढ़ जाते हैं। दोनों नेता उस वक्त पर गायब हो जाते हैं। दलित पात्र शिवचरण केवट गैर दलित नेताओं के धोखाधड़ी को उद्घाटित करते हुए कहता है कि " ई ससुर संकट मोचन तथा ताऊ हरगोविंद दोनों नदारत है । दोनों धोखेबाज हैं।"[4] 'यह नेताओं के अवसरवादिता सामने आता है। पुलिस को देखकर रामचरण गुस्से में आकर पुलिस पर गोली चला देते हैं और जवाबी कार्रवाही में ये दोनों बाप-बेटे मारे जाते हैं। इस कहानी के माध्यम से ठाकुर संकटमोचन तथा हरफूल चंद जैसे झूठे स्वार्थी नेताओं की पोल खोली जा सकती है ।और यह लोग किस प्रकार झूठा आश्वासन देकर अधिक वोट बटोरते हैं। यह कहानी में राजनीतिक जीवन में दलित चेतन मुखरित हुई है। इसके अतिरिक्त दलितों के भावनाओं तथा इनके संवेदना को भड़काकर राजनीति करने वाले नेताओं के चेष्टाओं का पर्दाफाश किया गया है। हत्यारे कहानी में हर फूलचंद तथा संकट मोचन दलितों के प्रति चिंतनशील दिखाया गया है। "आप लोगों से क्या कह रहा था कि हम हरिजन भाइयों पर जोर-जुल्मों की हुकूमत चलाने के वे नादिरशाही जमाने गुजर चुके, जो हमारे बाप-दादाओं के पीठों पर अपने जालिम निशान छोड़ गए हैं।... अब वक्त आ गया है कि हम हरिजन दुनिया में अपने नामोनिशान छोड़ जाएँगे।"[5] यह केवल उन लोगों की चाल तथा दिखावा था। चौधरी हरफूल चंद की घरवाली रामचरण की औरत रामरती को कहती है कि "ई ससुर पुलिस लोगन का सत्यानाश होवे ।"[6] तब उसके जवाब में रामरती दहाड़ती हुई कहती है-"पुलिसवाले तो शिवचरण के बाप के गोली चला बैठने के बाद गोली चलाये हैं। हमारे इनको तो सरकार नहीं मारी हैं, बाकी ई राक्षस ससुर ठाकुर संकटमोचन और तुम्हारे बुढ़ऊ हरफूल चौधरी मरवाय दिये हैं।"[7] इस वक्तव्य से रामचरण केवट की पत्नी रामरती अपने पति की हत्या का जिम्मेदार गैर दलित नेता संकट मोचन तथा हरफूल चंद को मानती है। हत्यारा कहानी में रामचरण केवट की हत्या एक सामाजिक प्रतिक्रिया है, जो व्यवस्था की अमानवीयता को उजागर करती है।

इब्बू मलंग कहानी में निहित दलित चेतना

'इब्बू मलंग' कहानी शैलेश की शुरुआती और उल्लेखनीय कहानियों में से एक है । यह बम्बई की निम्नवर्गीय जिन्दगी को रूपायित करनेवाली कहानी है। इसमें इब्बू मलंग, नबीपाड़ा का दादा नागप्पा, रमजान, कादिर, सुन्दरीबाई (सईइन), सुलतानी भंगिन तथा शकुन्तला घाटन आदि पात्र हैं। समूची कहानी इबादत हुसैन उर्फ इब्बू मस्तान उर्फ इब्बू मलंग के इर्द-गिर्द चक्कर काटती है। दादा नागप्पा अपने आर्थिक हितो के लिए 'इब्बू मस्तान' से 'इब्बू मलंग' बना देता है। "नागप्पा का प्रचार-तंत्र वह रंग लाता है कि इब्बू

मस्तान इब्बू मलंग हो जाता हैं। नबी पाड़े के एक कोने में उस कुतिया का शानदार मजार बना दिया गया है।"[8] इब्बू मलंग मनमौजी आदमी है । अच्छा खाना-पीना और इश्क ये दो उसके शौक है। इसके अतिरिक्त शैलेश ने इब्बू मलंग कहानी मे दलित चरित्र अपने प्रकृत रूप में दिखाते हैं। इसमे सामाजिक उपेक्षा एवं आर्थिक दुर्दशा से संत्रस्त दलित जीवन संदर्भों का मार्मिक और यथार्थ चित्रण किया है। इस कहानी मे मटियानी जी की समाज के यथार्थ में भीतर तक जा धेंसी कहानी है। यहीं मैली-कुचेली गरीबी और धर्म के अजीबोगरीब आडम्बर मिलकर एक ऐसे शख्स की रचना कर डालते हैं, जिसे मटियानी जी इम्बू मलंग का नाम देते है।

इब्बू मलंग का रंग सबसे अलग है। इस कहानी में उन्मुक्त कामुकता को मुख्यरूप से दर्शाया गया है। इब्बू मंलग एक दीन हीन लावारिस आदमी है। 'इब्बू मलंग यदि अधिक सफल कहानी है, तो इसका कारण भी यही है कि इब्बू मलग के सन्दर्भ में अपनी सदाशयता को लेखक विश्वसनीय और वास्तविक बनाकर प्रस्तुत किया है। इस कहानी का अतिरिका गुण यह भी है कि इच्छु मलग के चरित्र को सामाजिक विसंगतियो को पूरा परिप्रेक्ष्य सहज ही मिल सका है। सचमुच इस धर्म प्रधान देश में मलंग बनने और लाखो कमाने के लिए इससे अधिक कुछ और दरकार नही है। इबादत हुसैन को अंतिम में अपनी गलती का पछतावा होता है और वह दादा नागप्पा को बहुत खरिकोटि सुनाता है और शकुंतला भाई का पक्ष लेता है। "कसाई कुत्ते, उस दिन तैन हरामजादे, मेरी कुतिया की पीठ पर छुरा घुसेड़ दिया था, आज अपनी भैन के टुकड़े, मेरे ही घुसेड़ के मुझे यहीं दफना दे। बना दे मेरा भी मजार मेरी कुतिया की बगल में।... धीरे-धीरे चरस और आक्रोश से ऊपर को चढ़ी पुतलियां नीचे को बैठती चली गईं और तब इबादत हुसैन पूर तरह फूट-फूट कर रो पड़ा।"[9]

"दो दुखों का एक सुख" कहानी में दलित चेतना

"दो दुखों का एक सुख" कहानी का प्रकाशन सन् 1966 में हुआ था। इस कहानी का परिवेश अल्मोड़ा से है। यह मिरदुला कानी नामक एक भिखारीन की कहानी है । मिरदुला कानी करमिया कोढ़ी और अंधे सूरदास के साथ मंदिरों के सामने बैठकर भीख मांगती है। ये तीनों भीख साथ-साथ मांगते थे, पर रहते अलग-अलग थे। मिरदुला जगत मिस्त्री के यहाँ रहती थी। जात की वह ब्राह्मणी थी। "एक बार बहला-फुसलाकर मणिहार कलारों का झुण्ड उसे मेले में उठाकर ले गया, और "अपवित्तर" बनाकर मेले में ही छोड़कर चला गया था।"[10] वहीं से जगत मिस्त्री उसे उठा लाया था। अब वह उससे भीख मंगवाता है और शराब के नशे में धुत होकर पीटता और तरह-तरह से सताता रहता है। करमिया के आगे अपनी करम-कहानी कहते हुए वह जोरों से रो पड़ती है "हे राम ! कैसा पलीत जन्म दिया मुझ अभागिन को ? डोमड़े के घर पड़ी हैं। भीख मांगती जीवन काटती हूँ। इस पर भी अपना कोई वश नहीं।"[11] इस प्रकार इस कहानी में दलित चेतना के साथ-साथ स्त्री विमर्श के स्वर को भी देख सकते हैं। मिरदुला के साथ कुकर्म तथा अपवित्र बनाकर छोड़ दिया जाता है । करमिया कोढ़ी मृदुला काणी को चाहता है, लेकिन मृदुला काणी को सीधा सरल सूरदास अच्छा लगता है। करमिया इस पर जिस तरह से ईर्ष्याजन्य रोष से भरा नजर आता है और सूरदास के प्रति उसका व्यवहार अच्छा नहीं होता है। इस कहानी में मेले कुचैले तथा दीन वर्गों की कहानी भी इतनी शीतल तथा निर्मल हो सकता है ।यह प्रत्यक्ष रूप से सामने आता है। इस कहानी में एक प्रकार का संघर्ष है जो उनके प्रेम को बचाए रखने के लिए उनके निश्चलता तथा सबसे बड़ी मुख्य बात समाज से बचाए रखने के लिए यह महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह प्रेम गरीब, दुर्बल और असहाय कहे जाने वाले इस तबके की कहानी है, जिसे मटियानी ने आत्मिक शक्ति को इतने पास से इतनी गहराई से देखते है।

हारा हुआ कहानी

हारा हुआ कहानी का प्रकाशन वर्ष 1970 है।इसमे गैरदलितों की दलितों के प्रति आम धारणा का यथार्थ व्यक्त हुआ है। किंतु इस कहानी में आम धारणा के विपरीत परिणाम निकलते दिखाई देते हैं। इस कहानी का दलित चरित्र दुखहरन मोची अत्यंत असहाय होते हुए भी गैरदलित चरित्र गंडामल पहलवान के द्वारा विधवा पुत्री कैलासों के प्रति बुरी नजर डालने पर, जिस प्रकार का कथन करता है उससे उसकी दलित चेतना व्यक्त होती है,

"कह देना अपने बाप गंडामल पहलवान से, आगे से मेरे घर की तरफ मुँह किया, तो उसकी बेहया आँखों को कटन्नी से बाहर खींचकर बाहर निकाल दूँगा और जबान में ठोक दूँगा जूते की नाल! पता चल जाएगा हराम जादे को कि किसी की बेटी को बुरी नजर से देखना क्या होता है।"

इस कहानी में कहानीकार ने एक कमजोर, विवश और लाचार दलित के द्वारा फेंकी गई चुनौती से शक्तिशाली

गैरदलित के टूटते मनोबल को दर्शाकर महान आदर्श के साथ-साथ सामाजिक परिर्वन का संकेत भी प्रस्तुत किया है। क्योंकि गंडामल पहलवान के पुत्री के साथ भी दुष्कर्म हो चुका होता है और उसे दुखहरण मोची के धमकाने पर उसे सब कुछ याद आ जाता है और उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है।।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मटियानीजी की दलित-विमर्श विषयक दृष्टि
अधिक कुशल तथा पैनी है । उनके रचना संसार मे पात्र दबे -कुचले, भूखे, नंगे, दलितों-उपेक्षितों को आत्मीयता से मटियानी अपनी कहानियों में पनाह देते हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में भी उनके लिए उतनी जगह नहीं हैं। इतना ही नहीं, 'अपने पात्रों को जैसी उन्होंने आत्मीय उष्मा दी है वे प्रायः प्रेमचंद भी नहीं कर पाते। इसका कारण यह है कि मटियानी के पात्र उनके 'जिये-भोगे हैं।बम्बई के सड़ांध जीवन को भी दलित-जीवन के अन्तर्गत ही रखा है जो झोंपड़पट्टी और फुटपाथ के लोगों का है। यहाँ कोढ़ी हैं, भिखारी हैं, चोर बदमाश हैं, पाकेटमार हैं।
शैलेश के कहानियों मे दलित साहित्य की एक नयी चेतना उभरकर आ रही है।
इसे हिंदी साहित्य का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि स्वतंत्रता के बाद सबसे बड़े कथाकार अपनी कालजयी कहानियों के बल पर कहानीकार प्रेमचंद की उँचाईयों को भी पार करने वाले शैलेश मटियानी का हिंदी साहित्य के किसी खाते में नाम तक दर्ज नहीं है।

"राजेन्द्र यादव ने कहीं ऐसा लिखा स्मरण में आ रहा है कि मटियानी के पास कुछ कहानियाँ ऐसी हैं जिनके बदले में मैं अपना पूरा कृतित्व उनके नाम कर सकता हूँ। यह कहानी भी उन कहानियों में शामिल की जा सकती है।"[12]

इसलिए मटियानी स्वातंत्र्योत्तर के महान साहित्यकार के रू प मे उभरते है । वह जन प्रतिबद्ध लेखक है, जिसने केवल समाज में निचले तबके के हक की मांग अपने साहित्य में सशक्त रूप में करते है । वह समाजिक संरचना के कटु य थार्थ को अपने पात्रों के माध्यम से उन्मुख करते है तथा आ म जनता के संघर्षमयी जीवन को व्यक्त करते है।

"श्री प्रकाश मनु का कथन उचित जान पड़ता है, दलितों और नीचले वर्ग के लोगों से प्यार करने वाला उनसे बड़ा और कोई लेखक हमारे बीच हुआ ही नहीं। मटियानी का पूरा कथा साहित्य इस बात की गवाही देता है। ... यहाँ प्रेमचंद के बाद शैलेश मटियानी ही सबसे बड़े जनपक्षधर कथाकार साबित होते हैं।"[13]

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] दलित साहित्य की भूमिका, कॅवल भारती ।
[2] चील और अन्य कहानियां, चील कहानी - शैलेश मटियानी ,अक्षर प्रकाशन 1976 ।
[3] वही , चील कहानी ।
[4] वही , हत्यारा कहानी
[5] वही , हत्यारा कहानी
[6] वही , हत्यारा कहानी
[7] वही, हत्यारा कहानी
[8] वही, इब्बू मलंग कहानी
[9] वही , इब्बू मलंग कहानी
[10] वही , दो दुखों का एक सुख कहानी
[11] वही, दो दुखों का एक सुख कहानी
[12] https://share.google/0NvYMa0HSQGkp5zBv
[13] https://share.google/BDiZmFPsRuGu2JGA2

अन्य संदर्भ ग्रंथ

[14] shodhganga
[15] https://gadyakosh.org/gk